गुरु नानक – सबद ४३

कोटि कोटी मेरी आरजा पवण पीअण अपिआउ ॥

रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १४

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥१॥
साचा निरंकारु निज थाइ ॥
सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥१॥ रहाउ ॥
कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥
पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥३॥
नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥

सार: मनुष्य, अन्वेषण करने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के साथ, अक्सर प्रकृति की विशालता की ओर आकर्षित होते हैं जो उन्हें भविष्य जानने के विभिन्न तरीकों की खोज और प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है। हालाँकि, शक्तियाँ प्राप्त करने की इस खोज में, वह कभी-कभी इस बुनियादी सच को भूल जाते हैं कि निराकार सर्वव्यापी स्रोत प्रकृति के मूल आधार में निवास करता है। फिर भी यदि कोई व्यक्ति इस वास्तविकता को समझना चाहता है तो इसे पूरी तरह आत्मसात करने और प्रभावी ढंग से व्यक्त करने की यात्रा संभव है।

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥
लंबा जीवन जीने की आरज़ू और भोजन-पानी के रूप में वायु पर निर्वाह कर सकूं।

चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
एकांत में रहूं, कभी चाँद-सूरज न देखूं और सपने में भी न सोऊं।

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥१॥
इन सभी उपलब्धियों के बाद भी, सृष्टि के रचयिता की कृतियों का मोल नहीं लगाया जा सकता। फिर उसके अस्तित्व के विस्तार को कैसे व्यक्त किया जा सकता है। (१)

साचा निरंकारु निज थाइ ॥
सदैव सच, निराकार सर्वव्यापी जागरूकता, सृष्टि के मूल में निवास करती है।

सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥१॥ रहाउ ॥
यदि कोई इच्छा और लालसा रखता हो तब सत्य को ध्यानपूर्वक आत्मसात कर उसका ज्ञान पाया जा सकता है। (१)(विराम)

कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥
कई बार टुकड़ों में कट जाना और पिस जाना।

अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥
आग में जल जाना और राख में मिल जाना।

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥
इन सब उपलब्धियों के बावजूद भी रचयिता की कृतियों का मोल नहीं लगाया जा सकता। फिर उसके अस्तित्व के विस्तार को कैसे व्यक्त किया जा सकता है। (२)

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥
अगर पक्षी बनकर आसमान में उड़ा जा सके।

नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥
अदृश्य हो कर, बिना खाए-पीए जिया जा सके।

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥३॥
इन अद्भुत कार्यों के बाद भी, सृष्टि की कीमत लगाना असंभव है। फिर उसके अस्तित्व के विस्तार को कैसे व्यक्त किया जा सकता है। (३)

नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥
नानक कहते हैं, चाहे लाखों कागजों को बार-बार पढ़ा जाए और उन पर विचार किया जाए।

मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥
स्याही कभी ख़त्म न हो और कलम हवा की गति से लिखती जाए।

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥
इन सभी प्रयासों के बावजूद भी सृष्टिकर्ता की कृतियों का मोल नहीं लगाया जा सकता। फिर उसके अस्तित्व के विस्तार कैसे व्यक्त किया जा सकता है। (४)(२)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि चाहे हम शक्ति और पद में कितने भी ऊँचे क्यों न हो जाएँ, ये उपलब्धियाँ निर्माता की अनंत रचनाओं के अथाह मूल्य के सामने फीकी हैं। ब्रह्मांड के असीम विस्तार से लेकर जीवन के जटिल विवरण तक यह चमत्कार हमारी क्षमता से परे हैं जिन्हें हम माप नहीं सकते या पूरी तरह से समझ नहीं सकते। इस दृष्टिकोण को पहचानने से हमारा ध्यान सांसारिक लक्ष्यों के बजाय सृष्टि की सुंदरता और उसके रचयिता की महानता की तरफ़ जाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com